प्रथम दिवस आवरण FIRST DAY COVER

सरकारी महेन्द्रा कॉलेज, पटियाला

GOVT. MOHINDRA COLLEGE, PATIALA

Mathematics was added shortly afterwards and the college was affiliated to Calcutta University.

In 1880, Intermediate classes were started and in 1887 the college included graduate humanities courses of Punjab University. Post-graduation in Mathematics was started in 1912 and in the same year the first meeting of the Old Students' Association was held under the chairmanship of Principal E. Candler. The F.Sc. classes were started in 1920 and in 1922 Postgraduation in Philosophy was introduced.

The credit of publishing the first college magazine 'The Mahendra' and staging Shakespearian plays goes to Prof. K.K. Mukherjee in the 1920's.

The college was affiliated to Punjabi University in 1962.

At present, the college imparts instruction in Postgraduate and Honours School Courses in English, Economics, History and Pol. Science, besides the undergraduate courses in Science and Arts.

It deserves mention that Justice R.S. Sarkaria and Shri Jagan Nath Kaushal are among the illustrious alumni of the college.

Eminent educationists like E. Candler, (Sadhu) T.L. Vasvani, Dr. G.L. Bakshi, Dr. Bhagat Singh, S. Gursewak Singh, S. Harbaksh Singh & Dr. Joginder Singh have been Principals of this institution.

Material for text, courtesy: Principal, Government Mohindra College, Patiala.

Description of Designs

The stamp is designed by India Security Press, Nashik Road. The material for stamp and first day cover design is supplied by the College authorities. The cancellation is designed by Smt. Alka Sharma.

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

जारी करने की तारीख Date of issue	...14.3.88
मूल्यवर्ग Denomination	...100 पैसे P
कुल आकार Overall size	...3.91×2.90 सें.मी. cms.
मुद्रण आकार Printing size	...3.55×2.54 सें.मी. cms.
प्रति शीट संख्या Number per issue sheet	...35
रंग Colour	...एकरंगी Single colour
छिद्रण Perforation	...13×13
कागज	...स्वदेशी बिना जल-चिन्ह वाला पी.जी. मैट कोटेड डाक-टिकट कागज
Paper	...Indigenous unwatermarked P.G. Matt coated stamp paper
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	...फोटोग्रेव्योर Photogravure
मुद्रित डाक-टिकटों की संख्या Number Printed	...15,00,000
मुद्रण Printed	...भारत प्रतिभूति मुद्रणालय India Security Press

मूल्य रु. 1/-

Price Re. 1/-

Designed and produced by the Directorate of Advertising and Visual Publicity, Ministry of I & B., Govt. of India, New Delhi, for the Department of Posts and printed at Nu Tech Photolithographers.

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

सरकारी महेन्द्रा कॉलेज, पटियाला
Government Mohindra College, Patiala

विवरणिका
BROCHURE

सरकारी महेन्द्रा कॉलेज, पटियाला

महेन्द्रा कॉलेज, पटियाला स्वर्गीय महाराजा महेन्द्र सिंह की दान-शीलता और परोपकारिता का परिणाम है। महाराजा महेन्द्र सिंह 10 वर्ष की छोटी-सी आयु में ही पटियाला की गद्दी पर बैठे थे, और अपने थोड़े से जीवन-काल में ही इस संस्था को खड़ी करके उन्होंने राज्य के शैक्षिक जीवन पर अपनी अमिट छाप छोड़ दी। इस कॉलेज का शिलान्यास 30 मार्च, 1875 को तत्कालीन भारत के वायसराय लार्ड नार्थ ब्रुक के हाथों हुआ। इसका शिलान्यास हिन्दू रीति से किया गया था, जिसके अनुसार देवता को तुष्ट करने के लिए आधार-स्थल पर शेष-नाग की प्रतिमा रखी गई थी। इसके अलावा नींव में कुछ सिक्के रखने की यूरोपीय रीति का भी पालन किया गया था। लगभग एक शताब्दी से अधिक समय तक अपने असंख्य छात्रों के भविष्य निर्माण में इस संस्था ने अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

अपने प्रारम्भिक काल में यह लाहौर से दिल्ली तक फैले क्षेत्र में अपने प्रकार की अकेली संस्था थी। 17 मार्च 1884 को भारत के वायसराय लार्ड रिपन ने इस कॉलेज का उद्घाटन समारोह सम्पन्न किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने इसे शानदार वास्तुशिल्प का नमूना बतलाया और महाराजा महेन्द्र सिंह को जिन्होंने इसके निर्माण में काफी धन खर्च किया था, इसके लिए बधाई दी।

अपने वास्तुशिल्पीय सौन्दर्य के अलावा इस कॉलेज में दूर-दूर के छात्र प्रवेश पाने के लिए आए और शीघ्र ही देश के शिक्षा संबंधी मानचित्र में इसका अपना स्थान बन गया। सभी को निःशुल्क शिक्षा देने और धर्म-निरपेक्ष शिक्षा की परम्परा पर चलाने के कारण यह समाज के सभी वर्गों में अत्यधिक लोकप्रिय हो गया। इससे निकले सभी विषयों के प्रसिद्ध विद्वानों के कारण इसकी प्रतिष्ठा और लोकप्रियता और भी बढ़ गई जो आज भी उसी तरह बनी हुई है। यद्यपि इस कॉलेज में पहले संस्कृत में शिक्षा देने का विचार था, लेकिन बाद में फारसी, अरबी, अंग्रेजी और गणित की पढ़ाई को भी शामिल करके इस कॉलेज को कलकत्ता विश्वविद्यालय से संबद्ध कर दिया गया।

1880 में कॉलेज में इण्टरमीडिएट की कक्षाएं शुरू की गई और 1887 में इस कॉलेज में पंजाब विश्वविद्यालय के स्नातक स्तर के साहित्य पाठ्यक्रम भी शामिल कर लिए गए। गणित में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम 1912 में आरम्भ किया गया तथा उसी वर्ष प्रधानाचार्य ई॰ कैंडलर की अध्यक्षता में भूतपूर्व छात्र संघ की प्रथम बैठक हुई। एफ.एस-सी. कक्षाएं 1920 में आरंभ की गई तथा 1922 में दर्शनशास्त्र में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम आरंभ किया गया।

इस शताब्दी के तीसरे दशक में "दि महेन्द्रा" नामक प्रथम कॉलेज पत्रिका का प्रकाशन करने और शेक्सपीयर के नाटकों का मंच पर अभिनय करने का श्रेय प्रो. के.के. मुखर्जी को जाता है।

1962 में इस कॉलेज को पंजाबी विश्वविद्यालय के साथ संबद्ध कर दिया गया।

आजकल यह कॉलेज विज्ञान तथा कला में स्नातकपूर्व पाठ्यक्रमों के अतिरिक्त अंग्रेजी, अर्थशास्त्र, इतिहास तथा राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम और ऑनर्स स्कूल पाठ्यक्रम भी चला रहा है।

न्यायमूर्ति आर.एस. सरकारिया और श्री जगन्नाथ कौशल जैसी ख्याति प्राप्त विभूतियों ने भी इसी कॉलेज से शिक्षा ग्रहण की थी।

ई. कैंडलर, (साधु) टी.एल. वासवनी, डा. जी.एल. बक्शी, डा. भगत सिंह, सरदार गुरसेवक सिंह, सरदार हरबक्श सिंह और डा. जोगिन्दर सिंह जैसे सुप्रसिद्ध शिक्षाविद इस संस्था के प्रधानाचार्य रहे हैं।

मूल पाठ: प्रधानाचार्य, सरकारी महेन्द्रा कॉलेज, पटियाला के सौजन्य से।

डिज़ाइनों का विवरण

इस डाक-टिकट का डिज़ाइन भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नासिक रोड ने तैयार किया है। डाक-टिकट और प्रथम दिवस आवरण के डिज़ाइन के लिए सामग्री कॉलेज प्राधिकारियों द्वारा प्रदान की गई। विरूपण का डिज़ाइन श्रीमती अलका शर्मा ने तैयार किया है।

Government Mohindra College, Patiala

Mohindra College, Patiala, owes its existence to the munificence and philanthropic zeal of the late Maharaja Mohinder Singh who ascended the throne of Patiala at the tender age of ten and left his impress on the educational life of the state by creating this institution during his short life span. Lord Northbrook, the then Viceroy of India, laid the foundation stone of the college on 30th March, 1875. Its foundation was laid in accordance with the Hindu custom of placing an image of Shesh Nag at the base to propitiate the deity and the European custom of placing some coins in the foundation was also observed. The institution has played a stellar role in shaping the destinies of its countless alumni for well over a century.

At the time of its inception, it was the only institution of its kind in the area stretching from Lahore to Delhi. On 17th March, 1884, Lord Ripon, Viceroy of India, performed the opening ceremony of the college. In his inaugural address he hailed it as a 'magnificent architectural monument' and complimented Maharaja Mohinder Singh who had spent a princely sum on its construction.

Apart from its architectural grandeur, the college attracted students from far and wide and occupied a place of eminence in the educational landscape of the country. The gift of free education to all and the tradition of secular education made it very popular with all sections of society, and eminent scholars drawn from all disciplines gave it the prestige and popularity which it still enjoys. Though initially it was intended to impart instruction in Sanskrit, Persian and Arabic, the teaching of English and